GANESH AARTI

सुखकर्ता दु:खहर्ता वार्ता विघ्नाची।
नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची।
सर्वांगी सुंदर उटि शेंदूराची।
कंठी शोभे माळ मुक्ताफलांची ॥ १ ॥
जय देव जय देव जय मंगलमूरति
दर्शानामाश्रे मन:कामना पुरती ॥ धु ॥
रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा।
चंदनाची उटि कुमकुम केशरा।
हीरेजडित मुकुट शोभतो बरा।
रुन्ज्हुन्ति नूपुरे चरनी घागरिया ॥ २ ॥
जय देव जय देव ॥
लंबोदर पीताम्बर फनिवरबंधना ।
सरल सोंड वक्रतुंड त्रिनयना।
दास रामाचा वाट पाहे सादना।
संकटी पावावे , निर्वाणी रक्षावे , सुखरवंदना ॥ ३ ॥
जय देव जय देव ॥

।। श्रीदत्ताची आरती ।।

त्रिगुणात्मक त्रैमूर्ती दत्त हा जाणा। त्रिगुणी अवतार त्रैलोक्यराणा।
नेती नेति शब्द न ये अनुमाना। सुरवर मुनिजन योगी समाधि न ये ध्याना।।१।।
जय देव जय देव जय श्रीगुरूदत्ता। आरती ओवाळीतां हरली भवचिंता ।।धृ०।।
सबाह्य अभ्यंतरीं तूं एक दत्त। अभाग्यासी कैंची न कळे ही मात।
पराही परतली तेथें कैचा हेत। जन्ममरणाचा पुरलासे अन्त ।। जय०।।२।।
दत्त येऊनियां उभा ठाकला। साष्टांगें नमुनी प्रणिपात केला।
प्रसन्न होऊनी आशीर्वाद दिधला। जन्ममरणाचा फेरा चुकविला ।। जय०।।३।।
दत्त दत्त एसीं लागलें ध्यान। हरपलें मन झालें उन्मन।
मींतूपणाची झाली बोळवण। एका जनार्दनीं श्रीदत्त जाण ।।४।।
जय देव जय देव जय० ।।